Digitized by eGangotri

Parbhati

प्रभाती

[राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करने वाली रचनाएँ]

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

सोहनलाल द्विवेदी

Shanlal Drivedi

प्रकाशक

साहित्य-भवन लिमिटेड प्रयाग।

१९४४

Shitya Bhawan Paryag

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रथमबार : मूल्य २॥)

accn no: 15738
दि 2-10-0

72

स्कैन्ड/ Scanned

मुद्रक : गिरिजाप्रसाद श्रीवास्तव, हिन्दी साहित्य प्रेस, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

14-22 A153

प्रकाशकीय

सुप्रसिद्ध गांधीवादी कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी से कौन परिचित नहीं ? अभी आपने गान्धी-अभिनन्दन-ग्रन्थ संपादित करके राष्ट्रभाषा हिन्दी को गौरव-मुकुट पहनाया है, वह किस हिंदी प्रेमी के लिए गर्व की बात नहीं ? उनकी 'भैरवी','वासवदत्ता', 'कुणाल', 'विषपान', 'पूजागीत', 'चित्रा' 'वासन्ती', 'युगाधार', आदि ग्रन्थों का हिंदी-काव्य-क्षेत्र में अच्छा सम्मान है। अतएव 'प्रभाती' का प्रकाशन करते समय हम आंतरिक आनंद अनुभव करते हैं।

प्रस्तुत संग्रह में हमारी संस्कृति के मेरुदंड महान पुरुषों पर सुघर रचनायें हैं, नित्य-प्रति के विषयों पर मौलिक कवितायें हैं, और गाँधी जी और गांधी जी से सम्बंधित अन्य विषयों पर मधुरगीत हैं।

द्विवेदी जी के लिये गांधी जी 'क्रीड' न होकर 'टेम्परामेंट' हैं ! 'प्रभाती' आपके सामने है, आपको रुचेगी, मेरा विश्वास है !

पुरुषोत्तमदास टंडन
मंत्री
साहित्य-भवन लिमिटेड,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वक्तव्य

'प्रभाती' की रचनायें राष्ट्रीय जागरण के उपःकाल में लिखी गई हैं। आज देश को ऐसी रचनाओं की आवश्यकता है। जो रचना इस उद्देश को सामने रख कर लिखी जाती है, वह अभिनन्दनीय है, भले ही उसमें वह चमत्कार न हो, जिसे सुन कर 'साधु-साधु' की ही करतल-ध्वनि हम करते रहे हैं।

मेरे मत में किसी भी रचना के पढ़ने के समय हमें यह देखना चाहिए कि वह हमें किस दिशा में लिए जा रही है; कितनी दूर लिए जा रही है, यह जानना उतना आवश्यक नहीं। यदि दिशा अच्छी है तो उससे ही हमें संतोष होना चाहिए। यदि अच्छी दिशा में दूर तक हमें कोई भावना ले जाती है, तो वह बहुत अच्छी रचना है। इसमें संदेह नहीं।

आज हमें उस काव्य के चमत्कार की आवश्यकता नहीं, जो पंडित मंडली का ही अनुरंजन कर सकता है जिसके सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावों का उहापोह देखकर प्रतिभा की प्रखरता पर हम प्रशंसा के पुल बांधते आए हैं। काव्य के चमत्कार का युग गया! आज तो हमें अपने उन कोटि-कोटि भाई-बहनों के भावों को संसार के समक्ष रखना है जिसे वे नहीं रख सकते। कोटि-कोटि मूक पंगु मानवों को हमें वाणी एवं गति प्रदान करना है।

यह देश का सौभाग्य है कि रहस्यवाद या छायावाद के आकाश से उसका कवि धरती पर उतर आया है। उसने अपनी भूल स्वीकार की, यह तो उसकी महत्ता है। आज न अदृष्ट के दर्शन ही में उसे सुख मिलता है न प्रेमिका की प्रतीक्षा ही में। आज उसके कंठ से भी युग-वाणी का प्रसार हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

'कस्मै देवाय हविषा विधेम' का उत्तर और हो ही क्या सकता है? इसका एकमात्र उत्तर यही है कि शताब्दियों से उपेक्षित तिरस्कृत एवं वहिष्कृत जनता के लिए हम लिखें और उनकी भाषा में लिखें, जिसे वे समझ सकें। आज हमारे राष्ट्र की माँग यही है कि हम जनता के लिए साहित्य-सृजन करें।

इस दृष्टि से प्रारंभ ही से 'बहुजनहिताय' लिखने की मेरी चेष्टा रही है। जान बूझकर मैं कल्पना के पंखों पर चढ़कर हिम श्रृंगों पर नहीं उड़ा, क्योंकि उतनी दूर मेरा पाठक न जा सकता था। काव्य की लक्षणा एवं व्यंजनाओं का मोह भी मुझे छोड़ना पड़ा। अभिधा से ही मैंने अपना काम चलाया। कविता न लिखकर मैंने तुकबंदी लिखना स्वीकृत की और यदि इससे ये रचनायें जनता के हृदय तक पहुँच सकी हैं तो मैने अपने प्रयत्न को असफल नहीं माना।

तथागत से एक बार भिक्षु संघ ने पूछा कि भंते! आपके उपदेश देववाणी (संस्कृत) में लिखें जायें, या प्राकृत (बोलचाल की भाषा में) तथागत ने कहा था कि मेरे उपदेश उस भाषा में लिखे जाने चाहिए जो जनता की भाषा हो। और संस्कृत में नहीं, पाली भाषा में 'बुद्धदेव की वाणी' लिखी गई।

मैं समझता हूँ भाषा के संबंध में आज के प्रत्येक साहित्यकार को तथागत का यह संदेश सामने रखना चाहिये।

इतना ही नहीं, मैं तो कहता हूँ यदि आवश्यक हो और हमसे बन पड़े तो हम ग्राम्य-भाषा में वह साहित्य जनता के पास पहुँचायें जिसकी उन्हें आज आवश्यकता है!

हिंदी वाङमय में एक दुखद विकृति देखने में आ रही है। आज जिस साहित्य का सृजन हो रहा है उसमें ऐसी भावनाओं की प्रतिष्ठा की जाती है जो मानवता को रसातल के गर्त में ले जायेंगी। उस कवि ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

समाज, जाति एवं राष्ट्र के प्रति अच्छा व्यवहार नहीं किया जिसने अपने ही भाई-बहनों को बहकने वाली रचनायें दी हैं। जब राष्ट्र को उठने वाली संजीवनी देने की आवश्यकता हो तब उसे बैठाने वाली रचनायें देना देश-द्रोह नहीं तो क्या है ?

भले ही उनमें मेरा ही नाम पहले क्यों न आए, मैं ऐसे समस्त कवियों को चाहूँगा कि कहीं सुदूर ध्रुवप्रदेशों में निर्वासित कर दिए जायें, जिन्होंने कविता के कनक कटोरों से जनता को चिर निद्रित करनेवाला, चेतना घातक वासना का विष पिलाया है।

साहित्यकार का कर्तव्य है कि जनता के सदाचार की रक्षा करे, न कि उनके मानसपटल पर व्यभिचार के मधुर, मोहक चित्र अंकित करे।

संसार की समस्त भाषाओं में काव्य अग्र-जन्मा होने के कारण एवं सदाचार की शिक्षा देने के कारण वरेण्य रहा है ! आज हम उसी पूर्वजों के गौरवपूर्ण उत्तराधिकार को अक्षुण्य बनाये रखें, यही परम आवश्यकता है।

ये समस्त रचनायें तो उस कवि के आवाहन का मंत्र है, जो अपने एक गीत से, अपने एक स्वर से वह प्राण फूंकेगा, जिससे कोटि-कोटि भारतीयों के हृदय में स्वतंत्रता के लिए मर-मिटने की आग धधक उठेगी।

इन रचनाओं की भूमिका ही क्या ? ये तो स्वयं आगे रची जाने वाली कविताओं की भूमिका है !

सोहनलाल द्विवेदी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

विषय सूची

१. भावों की रानी से	...	१
२. उमंग	...	३
३. प्रस्तावना	...	४
४. प्रभाती	...	६
५. पृथ्वी भट्ट का पत्र	...	११
६. कणिका	...	१४
७. बापू	...	१५
८. सेवाग्राम	...	१६
९. वह आया	...	२३
१०. प्रथम प्रणाम	...	२५
११. अभियान गीत	...	३०
१२. गढ़वाल के प्रति	...	३२
१३. बलि वेदी पर	...	३४
१४. बापू के प्रति	...	३५
१५. व्रत समाप्ति	...	३८
१६. जागो बुद्धदेव भगवान	...	३९
१७. अशोक की हिंसा से विरक्ति	...	४१
१८. करुणा का गीत	...	४४
१९. होलिका के प्रति	...	४६
२०. श्रद्धाञ्जलि	...	४९

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

२१. अकबर और तुलसीदास ... ५१
२२. प्रसाद जी के पुण्य स्मृति में ... ५३
२३. सजल स्मृति ... ५४
२४. महाकवि पं० अयोध्या सिंह उपाध्याय के प्रति ... ५५
२५. प्रेमचन्द के प्रति ... ५७
२६. रत्नाकर ... ५६
२७. स्वागत-गान ... ६०
२८. रजत-जयंती ... ६३
२९. मंगल-गान ... ६४
३०. अभिनंदन ... ६६
३१. मंगल-गान ... ६८
३२. अभिनंदन ... ७०
३३. भैरवी के जन्म दिवस पर ... ७२
३४. हो दूर ... ७३
३५. प्राची प्रांगण में ... ७४
३६. अखंड भारत ... ७६
३७. भिक्षा-दान ... ७७
३८. विक्रमादित्य ... ७८
३९. अभियान गीत ... ८०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लेखक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भावों की रानी से

कल्पनामयी ओ कल्यानी !
ओ मेरे भावों की रानी !
क्यों भिगो रही कोमल कपोल
बहता है आंखों से पानी !

कैसा विषाद ? कैसा रे दुख ?
सब समय नहीं है अंधकार !
आती है काली रजनी तो
दिन का भी है उज्ज्वल प्रसार !

अधरों पर अपने हास धरो,
बाधाओं का उपहास धरो,
जीवन का दिव्य विकास धरो,
तुम यों न निराशा श्वास भरो !

विश्वास अमर, साधना सफल,
सत्कर्मों से श्रृंगार करो
धुँधली तस्वीरें खींच खींच
मत जीवन का संहार करो

वेदों उपनिषदों की धात्री !
चिर जीवन चिर आनंद यहाँ,
मंगल चिंतन, मंगल सुकर्म
है जीवन में अवसाद कहाँ ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हे आर्यों की गौरव विभूति !
तुम जीवन में मत अमा बनो
कल्याण-अमृत की वर्षा हो
तुम आशा की पूर्णिमा बनो !

* *

तुम जगद्धात्रि ! जग कल्याणी !
तुम महाशक्ति ! सोचो क्या हो ,
कविते ! केवल तुम नहीं अश्रु
जीवन में जय की आत्मा हो !

तुम कर्मगान गाओ जननी
तुम धर्मगान गाओ धन्ये
तुम राष्ट्र धर्म की दीक्षा दो ,
तुम करो राष्ट्र रक्षण पुण्ये !

गाओ आशा के दिव्य गान ,
गाओ, गाओ भैरवी तान
युग युग का घन तम हो विलीन
फूटे युग में नूतन विहान !

कल्मष छूटे अंतरतम का
गाओ पावन संगीत आज ,
जागे जग में मंगल-प्रभात
गाओ वह मंगल-गीत आज !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उमंग

उठ उठ री मानस की उमंग!
भर जीवन में नव रूप रंग!

उठ सागर की गहराई सी,
पर्वत की अमित उँचाई सी,
नभ की विशाल परछाँही सी,

लय हों अग जग के रंग ढंग!
उठ उठ री मानस की तरंग!

छा जीवन में बन एक आग,
अनुराग रहे या हो विराग,
चमके दोनों में आत्मत्याग;

जल जल चमकूँ मैं वह्नि रंग!
उठ उठ री मानस की उमंग!

प्रण में मरने की जगा साख,
रण में मर कर मैं बनूं राख,
उठ पड़ें राख से लाख लाख,

शर से भर कर खाली निषंग!
उठ उठ री मानस की उमंग!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रस्तावना

ओ नवयुग के कवि
जाग जाग !

प्राचीन पुरातन कलाकार
वैभव-वंदन में हुए लीन,
महलों को तज झोपड़ियों में
कब उनके मन की बजी बीन ?

यह गुरु कलंक का पंक मेट
बनकर शोषित का अभयगान,
नंगा, भूखा, प्यासा समाज,
देखता राह तेरी, महान !

नवजीवन के रवि !
जाग ! जाग !
ओ नवयुग के कवि !
जाग जाग !

है एक ओर, पीड़ित जनता,
है एक ओर, साम्राज्यवाद,
गा रे, जनगण के शक्तिगीत
जिससे टूटे युग का प्रमाद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पिस गई हमारी रीढ़ आह !
ढोया है अब तक राज्य भार
बलका संबल दे दुर्बल को
वह उठे आज निजको निहार !

नव चेतन की छवि !
जाग जाग !
ओ नवयुग के कवि !
जाग जाग !

गा ओ मेरे युग के गायक
वह महाक्रान्ति का अभयगान ,
झुलसें जिसकी ज्वालाओं में
अगणित अन्यायों के वितान !

रूढ़ियाँ, अंध-विश्वास घोर
जड़ जीवन का रे तिमिर चीर !
आलोक सत्य का फैला दे
वह चले मुक्त जीवन समीर !

ओ नव बलिकी हवि !
जाग जाग !
ओ नवयुग के कवि !
जाग जाग !

प्रभाती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रभाती

जागो जागो निद्रित भारत !
त्यागो समाधि हे योगिराज !
शृंगी फूँको, हो शंखनाद ,
डमरू का डिमडिम नव-निनाद !

हे शंकर के पावन प्रदेश !
खोलो त्रिनेत्र तुम लाल लाल !
कटि में कस लो व्याघ्रांबर को
कर में त्रिशूल लो फिर सँभाल !

विस्मरण हुआ तुमको कैसे
वह पुण्य पुरातन स्वर्णकाल ?
अपमान तुम्हारे कुल का लख
हो गई पार्वती भस्म क्षार !

वह दक्ष प्रजापति का महान
मख ध्वंस हुआ, भर गया शोर ,
कँप उठी धरा, कँप उठा व्योम ,
सागर में लहरी प्रलयरोर !

किस रोषी ऋषि का क्रुद्ध शाप
है किए बंद स्मृति-नयन छोर ?
जागो मेरे सोने वाले
अब गई रात, आ गया भोर !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

देखा तुमने निज आँखों से
जब थी दुनियाँ में सघन रात,
गूँजें वेदों के गान यहाँ
फूटा जग में जीवन प्रभात !

देखा तुमने निज आँखों से
कितनों ही के उत्थान पतन,
इतिहास विश्व के दृष्टा तुम
सृष्टा कितनों के जन्म-मरण !

देखा तुमने निज आँखों से
सतयुग, त्रेता, द्वापर, समस्त,
कैसे कब किसका हुआ उदय,
कैसे कब किसका हुआ अस्त !

हो गया सभी तो नष्ट भ्रष्ट
अवशिष्ट रहा क्या यहाँ हाय ?
विस्मरण हो रहे दिवस पर्व
संवत्सर भी विस्मरण प्राय !

ईंटे पत्थर प्राचीर खड़ी
क्या और पास में है विशेष
देखो अबतो ध्वंसावशेष
देखो अबतो भग्नावशेष !

किसका इतना उत्थान हुआ,
औ किसका इतना अधःपात !
हे महामहिम क्या और कहूँ
क्या तुम्हें और है नहीं ज्ञात ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सब ज्ञात तुम्हें तो फिर क्यों यों
तुम जान जान बनते अजान,
जागो मेरे सोने वाले !
जागो भारत ! जागो महान !

बोलो, वे द्रोणाचार्य कहाँ ?
वह सूक्ष्म लक्ष्य-संधान कहाँ ?
हैं कहाँ वीर अर्जुन मेरे
गाँडीव कहाँ है ? बाण कहाँ ?

गीता - गायक हैं कृष्ण कहाँ ?
वह धीर धनुर्धर पार्थ कहाँ ?
है कुरुक्षेत्र वैसा ही पर
वह शौर्य कहाँ ? पुरुषार्थ कहाँ ?

हैं कहाँ महाभारत वाले
योधा, पदातिगण, सेनानी ?
गुरु, कर्ण, युधिष्ठिर, भीष्म, भीम,
वे रण प्रण व्रण के अभिमानी !

हैं कालिदास के काव्यशेष
विक्रमादित्य का राज कहाँ ?
मेरा मयूर सिंहासन वह
मेरे भारत का ताज कहाँ ?

वह चन्द्रगुप्त का राज कहाँ
अपना विशाल साम्राज्य कहाँ ?
वह महा क्रान्ति के संचालक
गुरुदेव कहाँ ? चाणक्य कहाँ ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वैभव विलास के दिवस कहाँ ?
उल्लास हास के दिवस कहाँ ?
हैं कहाँ हर्षवर्धन मेरे
अंकित केवल इतिहास यहाँ !

है यत्र तत्र बस कीर्ति-स्तंभ
सम्राट अशोक महान कहाँ ?
दुर्जय कलिंग के मद-ध्वंसक
शूरों के युद्ध प्रयाण कहाँ ?

प्राचीरों में वंदिनी बनी
बैठी है सीता सुकुमारी
गल रहे कुसुम से अंग अंग
दृग से अविरल धारा जारी !

धन्वाधारी हैं राम कहाँ ?
वे बलधारी हनुमान कहाँ ?
है खड़ी स्वर्ण लंका अविचल
अपमानित के अरमान कहाँ ?

*

जब प्रणय बना जग में विलास
तब तो अपना ही बना काल।
सब तुम्हें ज्ञात था पृथ्वीराज
तब क्यों न चले पथपर सँभाल !

जग जातीं तुम ही सँयोगिते !
मत सोतीं, यों बेसुध रानी !
तो क्यों होते हम पराधीन ?
खोते अपने कुल का पानी !

प्रभाती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्र भा ती

अब कब जागोगे पृथ्वीराज ?
खोलो अलसित पलकें अजान !
अँगड़ाई लेती है ऊषा,
हट गई निशा, आया विहान !

जागो दरिद्रता के विप्लव !
जागो भूखों की प्रलय-तान !
जागो आहत उर की ज्वाला !
युग युग के वंदी मूक गान !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पृथ्वीभट्ट का पत्र

अचल! आज चल क्यों तुम पल में
कैसा यह ढरका दृग-जल?
नकुल ले चला तृण कुश की
मधुकरियाँ, बच्चे क्षुधा-विकल?

दुसह हो गया भार व्यथा का
द्रवित हुए पाषाण-हृदय,
चले कहाँ? चेतकपर चढ़ कर
करने संधि, न प्रण संचय!

सजल नेत्र, मुखम्लान, गतश्री
कहाँ आज सरदार चले?
किसने कहा? संधि करने तुम
अकबर के दरबार चले

रोको चेतक, उठे न फिर अब,
क़दम कहीं फिर भी आगे।
सोचो किधर जा रहे हो तुम?
यों अधीर आकुल भागे?

सब तो ही झुक गए, लगा
कालिख पुरुषों के माथों में,
रजपूतों की लाज आज
रजपूत! तुम्हारे हाथों में!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE
प्रभाती

Digitized by eGangotri

तुम शिशोदिया गौरव गिरि के
एकमात्र हो स्तंभ खड़े
झुकना नहीं, आज ही तो तुम
अंतिम दुर्ग अखर्व चढ़े!

आज युगों के तप संयम
क्षत्रिय शोणित की बारी है
अग्नि-परीक्षा, मत्स्य भेद,
वरमाला की तैयारी है!

क्षत्रिय जननी का अमृतपय
आज कलंकित हो न कहीं;
आने वाली पीढ़ी में
कायरता अंकित हो न कहीं।

बढ़े कहीं रजपूत युद्ध में
तो उर शंकित हो न कहीं;
करके स्मरण तुम्हारा मुखनत
लघुता झंकृत हो न कहीं।

हो कंचन तन, रज के टूटे,
या वल्मीकि भवन कर ले:
विषधर डस ले; व्याघ्रसिंह
अनजाने उदर दरी भर ले!

अरावली फट जाय, खंड हो,
शैल खंड हो गर्तगहन!
क्षत्रियकुल गौरव अशेष तुम
भले रसातल करो वरण!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यही समय है प्रलय मेघ पर
चमको बन विद्युत्रेखा !
यही समय है, काल-गाल में
बनो अमृत की अवलेखा !!

ओ बप्पारावल' के वंशज !
त्योंही तुम प्रताप,—मेरे
आत्मसमर्पण करो न तुम
मर जाओ, भले मृत्यु घेरे !

 CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कणिका

खिल उठी हैं राष्ट्र की तरुणाइयाँ !
आज प्राची में फटीं अरुणाइयाँ !
यह नहीं भूकम्प है या है प्रलय ,
ली जवानी में फ़क़त अँगड़ाइयाँ !

ये चले क्या ? क्रान्ति के नारे चले,
और नभ पर खिसकते तारे चले !
है चिता की भस्म मस्तक पर लगी ,
ये धधकते लाल अंगारे चले !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बापू

कहा हिन्दुओं ने भारत में
फिर से मनमोहन आया,
और मुसलमानों की आँखों ने
पैगम्बर को पाया!

सागर की नीली लहरों पर
लहराता आया संगीत
ईसा ने अवतार लिया
एशिया खंड में दिव्यपुनीत!

करुणामय भक्तों की आँखों
में सुख की गंगा उमड़ी,
शुद्धोदन की लाल लाड़ले
की सुन्दर छवि दीख पड़ी

समा गया अगणित प्राणों में
धारण करके अगणित रूप
कर्मवीर गाँधी तू कितना
प्यारा है देवता स्वरूप!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सेवा ग्राम

वर्धा से दूर
एक छोटा-सा बसा ग्राम,
चर्चा और अर्चा नित्य
जिसकी है धाम-धाम,
मिट्टी के कच्चे घर
प्रार्थना से झुके नीचे
आकांक्षा से उच्च उठे
करते हैं स्वागत आगत का।
देते हैं दूध, दही, घृत-भात,
हालके उगाये हुये ताजे-ताजे साग-पात,
मोटी रोटी,
स्वच्छ वायु
जिससे बढ़े आयु
होता निर्माण नहीं तन ही का कोष,
मन का भी कोष
देता है अन्न वहाँ जाने कैसा सन्तोष ?
फूस की कुटीर बनी
रहते हैं कौन यहाँ ?
अर्धनग्न,
त्यागी-से, विरागी-से, चिन्तारत अनुरागी से
करते क्या काम यहाँ ?
चर्खे का नहीं टूटता है तार
कानों में सुन पड़ती झङ्कार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्या है सब यही योग ?
यहाँ का उद्योग ?

*

होता जहाँ प्रभात
ये ऋषि-मुनियों की जमात
जाती चली खेतों में,
लग जाते, जोतने में, बोने में,
जगता अभिमान उन्हें कृषक के होने में।
छाती रक्त रश्मियां जब
उनके मुखमण्डल पर
खिल जाता अन्तर !
कैसा यह देश-केन्द्र ?
आते रङ्क औ नरेन्द्र
मूर्ख, विज्ञ, निर्बल औ बलवान,
सभी ढूँढ़ते-सा अपना यहाँ त्राण,
कल्याण,
कौन वह भाग्यवान ?
पाने को जिससे दान
खड़ी रहते द्वार पर ही जनगण महान ?
कैसा यह राष्ट्र-केन्द्र
परिधि से दूर-दूर
आते हैं यहाँ देश के योधा शूर
करने को मन्त्रणा-सी
पाने को आदेश
ले जाने को ग्राम-ग्राम, धाम-धाम
सन्देश,
कौन वह अग्रणी ?

प्र भा ती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जिसका जगत् ऋणी ?
कौन यह तीर्थधाम ?
आते दर्शनार्थी जहाँ प्रतियाम,
मन्दिर है कहाँ यहाँ ?
प्रतिमा वह कौन कहाँ ?
किसकी यहाँ महिमा है ?
किसकी यहाँ गरिमा है ?
लछिमा बनी जहाँ भूतल की सब विभूति !
कौन वह दिव्य मूर्ति,
देती जो शक्ति स्फूर्ति ?

*

सेवाग्राम,
यह है हिमगिरि अभिराम
जहाँ से प्रवाहित प्रवहमान
सेवा की सुरसरि छविमान
बहती ही रहती
सहस्रधार
सींचती-सी, ताप शाप खींचती-सी,
अमृत उलीचती-सी
हरित भरित करती नित्य
राष्ट्र के तन मन प्राण !

*

देश की समस्या सभी
सुलभती रहती यहीं
राजनीति की है चटशाला यह भारत की
यहीं से जाते राष्ट्रदूत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

करते हैं कार्यपूत
बाँधते हैं कच्चे सूत से विश्व को,
आगत भविष्य को
चर्खे के तार से,
स्नेह झङ्कार से,
मृदु मुसकान से,
आत्म बलिदान से।

*

सुलगता रहता है यहीं अग्नि होत्र
दिन-रात,
शीतल नहीं होती है जिसकी कभी
अरुण शिखा,
होमते रहते हैं सब आहुतियाँ
कोई धन, कोई मन, कोई तन,
कोई कोई होम देता सर्वस्व—
जीवन !
मुक्ति यज्ञ का यहाँ बड़ा समारोह है,
मुक्ति छन्द की यहाँ
गमक, मीड़, मूर्च्छना, मन्द, तीव्र,
आरोह, अवरोह है।
शीतल-से बनते क्यों भव ताप तप्त प्राण ?
किसका यह तप-प्रभाव ?
किसका यह पुण्य-सुख ?
कौन वह यती, व्रती,
कौन वह सुकृती,

*

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE
प्रभाती

Digitized by eGangotri

ईश्वर के अंश ने किया है जहाँ विकास,
आत्मा का यहाँ है परमोज्ज्वल प्रकाश
सत्य की ज्योति यहाँ,
करुणा का यहाँ निवास !
कुष्टी कोई, कोई बधिर,
कोई अपरूपं, कोई चित्त स्थिर,
कोई सुन्दर सुरूप, कोई कान्तिमय अनूप,
कैसा यह खेला है ?
जुड़ा शम्भुमेला है[1] ?
कौन है महोत्सव आज,
कैसी यह बेला है !
राष्ट्र मस्तिष्क यही
उठते जहाँ विचार
ग्रन्थियाँ जटिल जहाँ नीतिकी सुलझतीं,
बन करके आदेश,
अङ्ग-अङ्ग में नवीन रक्त ले उतरतीं।
अङ्ग, बङ्ग, गुर्जर, द्रविड़, कलिङ्ग,
लचते कर्म पथ में,
रुकते हैं न अथ में,
बढ़ते प्रलय रथ में !

*

राष्ट्र का हृदय यही
होते जहाँ आघात प्रतिघात
व्यथा वेदनाओं के जहाँ पर सङ्घात,

---

[1] बापू आश्रमवासियों को शम्भुमेला कहते हैं, जहाँ सभी प्रकार के लोग रहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बहता है झञ्झावात,
उगती है काली रात,
उठती है जहाँ उमङ्ग,
बढ़ती है आगे ले आत्म-शक्ति की तरङ्ग,
तमतोम चीर, हटा गहन पीर,
लाने को जीवन की प्राची में
स्वर्णिम हर्षमय, अभिनव प्रकर्षमय,
नव उत्कर्षमय
पावन प्रभात !

*

हाथ पाँव भी यही
देश का राष्ट्र का
करता जो यह काम,
पुण्यधाम
सेवाग्राम,
उसको अनुसरते
उसे सब वरते,
तरते हैं अगम सिन्धु जिसमें भी उतरते !

*

जाति पाँत का है यहाँ कोई नहीं विचार,
ईश्वर के पूत सभी
उर उदार,
मानव-मानव समान,
एक गान,
गूँजता रहता महान !
जो भी यहाँ आते हैं
एक साथ बैठ कर एक पङ्क्ति में खाते हैं

प्र भा ती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

एक क्षण को ही सही
अपने में एक परिवर्तन-सा पाते हैं
मानव मानव समान
उनके भी प्राणों में बज उठता यह
महागान !

*

संस्कृति का नव विधान
यहीं ले रहा है आज अपनी शैशव उठान,
जहाँ नहीं भेद भाव
जहाँ नहीं है दुराव,
जाति वर्ण धर्म का जहाँ नहीं प्रभाव
यहाँ नहीं कोई कहीं अछूत
मानव हैं सभी पूत

*

विश्व-कोलाहल, हलचल, महारव,
छोर छूकर ग्राम का होता शान्त,
किसका यह तप प्रशान्त ?
होते दुरित मनके ताप, पाप, अभिशाप,
किसका यह बल प्रताप,
कौन पुण्यश्लोक आप ?

*

कैसे दारिद्रय हटे,
दुर्दिन का मेघ फटे,
इसकी ही है चर्चा और शतविचार,
सेवा कर्म,
सेवा धर्म,
सेवा ग्राम का यही है रहस्य-मर्म !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वह आया

युग युग का घन तम समेटता,
नव-प्रकाश प्राणों में भरता,

यौवनभर शत शत व्रत करता,
जीवनभर सत्पथ अनुसरता।
वृद्धवीर बापू वह आया?
कोटि कोटि चरणों को धरता॥

निद्रित भारत जगा आज है,
यह किसका पावन प्रभाव है,
किसके करुणांचल के नीचे,
निर्भयता का बढ़ा भाव है?

नव-जीवन की श्वास ले रहे,
हम भी जाग उठे हैं जग में
उठा हृदय से हमें लगाया,
किसने ममता भर कर दृग में?

व्यथित राष्ट्र पर आँचल करता,
करुणा के नव रसकन ढरता।
वृद्ध वीर बापू वह आया?
कोटि कोटि चरणों को धरता!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

धरणी-मग होता है डगमग,
जब चलता यह धीर तपस्वी।
गगन मगन होकर गाता है,
गाता जो भी राग मनस्वी॥

डग पर डग धर धर चलते हैं,
कोटि कोटि योधा सेनानी।
विनत माथ, उन्नत विरोध ले,
कर निःशस्त्र आत्म-अभिमानी॥

जननी की कड़ियाँ तड़काना,
स्वतंत्रता के नवस्वर भरता।
व्रह वीर बापू वह आया,
कोटि कोटि चरणों को धरता॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रथम प्रणाम

प्रथम प्रणाम
सतत प्रणाम !

कोटि कोटि नंगों भिखमंगों के जो साथ
खड़े हुए हैं कंधा जोड़े, उन्नत माथ,
शोषित जन के, पीड़ित जन के कर को थाम,
बढ़े जा रहे उधर, जिधर है मुक्ति प्रकाम

ज्ञात नहीं हैं
जिनके नाम !
उन्हें प्रणाम !
सतत प्रणाम !

भेद गया है दीन-अश्रु से जिनका मर्म,
मुहताजों के साथ न जिनको आती शर्म,
किसी देश में किसी वेश में करते कर्म,
मानव को मानव कहना है जिनका धर्म !
मानवता का संस्थापन ही है जिनका धर्म !
कोई कुल हो, जाति, वर्ण, कोई भी धाम,
जहाँ जहाँ दीनबंधु अपने अभिराम,
राष्ट्रनियंता सजग सुकवि शिल्पी गुणग्राम !
लेखक, वक्ता, गायक, नेता गौरवधाम !

उन्हें प्रणाम
कोटि प्रणाम !

प्रभाती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कोटि कोटि नंगों भिखमंगों के जो साथ,
खड़े हुए हैं कंधा जोड़े, उन्नत माथ—
जिनके गीतों के पढ़ने से मिलती शान्ति,
जिनकी तानों के सुनने से झिलती भ्रान्ति,
छा जाती मुखमंडल पर यौवन की कान्ति,
जिनकी टेकों पर टिकने से टिकती क्रान्ति!
मरण मधुर बन जाता है जैसे वरदान,
अधरों पर खिल जाती है मादक मुसकान,
नहीं देख सकते जग में अन्याय वितान,
प्राण उच्छ्वसित होते, होने को बलिदान!

जो घावों पर मरहम का
कर देते काम!
उन्हें प्रणाम!
प्रथम प्रणाम!

कोटि कोटि नंगों भिखमंगों के जो साथ,
खड़े हुए हैं कंधा जोड़े, उन्नत माथ—
उन्हें जिन्हें है नहीं जगत में अपना काम
राजा से बन गए भिखारी तज आराम,
दर दर भीख माँगते सहते वर्षा घाम,
दो सूखी मधुकरियाँ दे देतीं विश्राम!
जिनकी आत्मा सदा सत्य का करती शोध,
जिनको है अपनी गौरव गरिमा का बोध,
जिन्हें दुखी पर दया, क्रूर पर आता क्रोध,
अत्याचारों का अभीष्ट जिनको प्रतिशोध!

प्रणत प्रणाम!
सतत प्रणाम!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कोटि कोटि नंगों भिखमंगों के जो साथ
खड़े हुए हैं कंधा जोड़े, उन्नत माथ।
शोषित जन के, पीड़ित जन के कर को थाम
बढ़े जा रहे उधर, जिधर ही मुक्ति प्रकाम।
प्राण उच्छ्वसित होते होने को बलिदान,
नहीं देख सकते जग में अन्याय वितान,

जो घावों पर मरहम का
कर देते काम
उन्हें प्रणाम
सतत प्रणाम!
प्रणत प्रणाम!

कोटि कोटि नंगों भिखमंगों के जो साथ,
खड़े हुए हैं कंधा जोड़े, उन्नत माथ—

उन्हें जिन्हें है नहीं जगत में अपना काम
राजा से बनगए भिखारी तज आराम,
दर दर भीख माँगते सहते वर्षा-धाम,
दो सूखी मधु करियाँ दे देतीं विश्राम,
जिनकी आत्मा सदा सत्य का करती शोध,
जिनको है अपनी गौरव गरिमा का बोध
जिन्हें दुखी पर दया, क्रूर पर आता क्रोध,
अत्याचारों का अभीष्ट जिनको प्रतिशोध

ज्ञात नहीं हैं
जिनके नाम!
उन्हें प्रणाम
कोटि प्रमाण!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कोटि कोटि नंगों भिखमंगों के जो साथ,
खड़े हुए हैं कंधा जोड़े, उन्नत माथ।

यौवन में ही लिया जिन्होंने है वैराग,
मातृ भूमि का जगा जिन्हें ऐसा अनुराग!
नगर नगर की, ग्राम ग्राम की छानी धूल
समझे जिससे सोई जनता अपनी भूल,
सभी जाति में, सभी देश में, सभी मुकाम,
बने हुए हैं इन्हीं शोषितों ही के धाम
उन्हें प्रणाम!
जिनके उपर है जग की रक्षा का भार
जिनकी पीठ कमर पर ही निर्भर व्यापार
जिनकी अस्थि पंजरों पर हैं खड़े मकान,
क़िले, महल, ये दुर्ग, राज्य, प्राचीर उठान,
जिनको रोटी नमक न होती कभी नसीब,
जिनको युग ने बना रखा है सदा ग़रीब,
उन मूर्खों को विद्वानों को जो दिन रात,
इन्हें जगाने को फेरी देते है प्रात;
सीखा जिनने विषधर के मोहन का मंत्र,
दाँत न तोड़े, विष भी खींचा, रच कर तंत्र,
दोष निकाला दोषी को कर दिया स्वतंत्र,
पक्षी को भी किया नहीं परवश परतंत्र,

उन्हें प्रणाम
सतत प्रणाम
प्रणत प्रणाम!

कोटि कोटि नंगों भिखमंगों के जो साथ,
खड़े हुए हैं कंधा जोड़े, उन्नत माथ—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जंजीरों में कसे हुए सिकचों के पार
जन्म भूमि-जननी की करते जय जय कार
सही कठिन हथकड़ियों की बेतों की मार
आजादी की कभी न छेड़ी टेक पुकार
स्वार्थ,लोभ, यश, कभी सका है जिन्हें न जीत
जो अपनी धुन के मतवाले मन के मीत
ढाने को साम्राज्यवाद की दृढ़ दीवार
वार वार बलिदान चढ़े प्राणों को वार

वंद सीकचों में जो हैं
अपने सरनाम
उन्हें प्रणाम !

कोटि कोट नंगों भिगमंगों के जो साथ,
खड़े हुए हैं कंधा जोड़े, उन्नत माथ—
उन्हीं कर्मठों, ध्रुवधीरों को है प्रतियाम
कोटि प्रणाम !

जो फाँसी के तख़्तों पर जाते हैं झूम,
जो हँसते हँसते शूली को लेते चूम
दीवारों में चुन जाते हैं जो मासूम
टेक न तजते पी जाते हैं विष का धूम !
उस आगत को जो कि अनागत दिव्य भविष्य,
जिसकी पावन ज्वाला में सब पाप हविष्य !
सब स्वतन्त्र,सब सुखी जहाँ पर, सुख विश्राम !
नव युग के उस नव प्रभात को कोटि प्रणाम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE
प्रभाती

Digitized by eGangotri

अभियान—गीत

चल रे चल !
अडिग ! अचल !

घन गर्जन, हिम वर्षण !
तिमिर सघन, तड़ित पतन !
शिर उन्नत, मन उन्नत !
प्रण उन्नत, क्षत विक्षत !

रुक न विचल !
झुक न विचल !
गति न बदल !
अनिल ! अनल !
चल रे चल !

चिर शोषण, चिर दोहन !
रक्त न तन, बुझे नयन !
बड़वानल ! जल जल जल !
जगती तल कर उज्ज्वल

करुणा जल
ढल ढल ढल !
सत्य सबल !
आत्म प्रबल !
चल रे चल !

Sri Pratap Singh Library Srinagar.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कर बंधन, उर बंधन !
तन बंधन, मन बंधन !
अविचल रण, अविरल प्रण !
शत शत व्रण, हों क्षण क्षण !

शिर करतल !
जय करतल !
बलि करतल !
बल करतल !
बल भर बल !
चल रे चल !

प्रभाती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गढ़वाल के प्रति

जाग रे जाग
पहाड़ी देश

जगा बंगाल, जगा पांचाल,
जगा है सारा देश अशेष,
जाग! तू भी मेरे गढ़वाल,
हिमाचल के प्यारे गढ़देश!

साज सुँदर
केसरिया देश
जाग! रे जाग!
पहाड़ी देश !

बह रहा है नयनों से नीर
नहीं रे तन पर कोई चीर,
देखती तेरी मुख की ओर,
हो रही जननी आज अधीर

देख जननी के
रूखे केश
जाग रे जाग !
पहाड़ी देश !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लिया तुझ में गंगा ने जन्म
किया हरियाला सारा देश,
बहा दे स्वतंत्रता का स्रोत
अरे ओ पावन पुण्य प्रदेश !

यातनायें हो
जायें शेष,
जाग रे जाग !
पहाड़ी देश !

हिमाचल के प्यारे गढ़वाल
आज भारत की लाज सँभाल
शुभ्र अंचल में लगा न दाग़
उठा रे अपनी भुजा विशाल

शक्ति है तुझ में
अतुल अशेष
जाग रे जाग !
पहाड़ी देश !

प्रभाती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बलिवेदी पर

खादी का बाना पहन लिया,
आज़ादी ध्येय हमारा है,
आज़ादी पर मर मिटना है,
हमने अब यही विचारा है,

जननी की जय जय गायेंगे,
हम बलिवेदी पर जायेंगे ।

हैं शिवा प्रताप गए जिससे
है वीरों की यह वही गली,
श्री कृष्णधाम जाने वाली
यह तो पावन है राह भली,

तन मन धन प्राण चढ़ायेंगे,
हम बलिवेदी पर जायेंगे,

संतान शूरवीरों की हैं
हम दास नहीं कहलायेंगे,
या तो स्वतंत्र हो जायेंगे,
या तो हम मर मिट जायेंगे,

हम अमर शहीद कहायेंगे,
हम बलिवेदी पर जायेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बापू के प्रति

हे प्रबुद्ध !

आज तुम करने चले पुनः युद्ध ?
अग्नि में प्रवेश कर बनने चले आत्म शुद्ध
मुक्त चले करने निज द्वार रुद्ध
हे अक्रुद्ध !

आज जब छाया हुआ घोर गहन अंधकार
सूझता न आरपार ;
एकाकी तब मौन कहाँ
तरी चढ़े
जा रहे हो रूठे से कर्णधार !

क्षुब्ध हुए हमसे क्या राष्ट्रदेव !
महादेव !
आज फिर गरल उठा अधरों से लगा लिया।
करुणामय !
किस पर यह महारोष ?

हम विमूढ़
समझ नहीं पाते कर्तव्य गूढ़
कौन तत्त्व है निगूढ़
तुम न जलो साथ साथ
रखो निज वरद हाथ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE
प्र भा ती

Digitized by eGangotri

तुम रहे हो विश्ववंद्य !
हम न रहेंगे अनाथ !

यों ही विश्वप्रांगण में
आज महा अग्निकांड ,
पश्चिम से प्राची तक
ज्वालायें हैं प्रकांड !
आज रहता है दृष्टिमान
विश्वभांड !

तपोनिधे ! तव है यह व्रत विधान ?
तुम हो आत्म बल निधान !
किन्तु, हम तो अशक्त ,
धैर्य हो रहा त्यक्त !

तुम हो उपवासरत निराहार
निखिल राष्ट्र निराहार !
तुम उदास
हम उदास

इस पद निक्षेप में
रुद्ध आज राष्ट्रश्वास ,
रक्तमंद, बुद्धि कुंद, गिरा मूक ,
आज किधर एकाकी तुम
कर रहे अचिर प्रवास ?

यों ही राष्ट्र क्षत विक्षत
रक्त भरा है जनपथ ,
बढ़ता नहीं गतिरथ ,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भस्मीभूत बने भवन ,
निर्जन हैं बने सदन ,
अग्नि दहन
आज गहन !

देख देख हाहाकार ;
सूत्रधार !
तुम भी क्या कूद पड़े ?
हममें आ हुए खड़े ,
चलने को साथ साथ ;
जलने को साथ साथ ,
तुम प्रसन्न ,
जन प्रसन्न ;

जनता के हृदय प्राण !
तुमसे ही राष्ट्र की धमनियों में
जीवन है प्रवहमान !
चेतन है प्रवहमान !
यौवन है प्रवहमान !

हे दधीचि !
अस्थियों को आज नाश
करो मत करुणानिधान !
ये ही वज्र के समान
ध्वस्त करेंगी महर्षि !
पाप ताप ,
असुरों को शक्ति सभी
होगी देव तिरोधान !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE
प्रभाती

Digitized by eGangotri

व्रत-समाप्ति

आज दिवस है व्रत समाप्ति का, महाशान्ति का पर्व,
आज सुखद संवाद देश को, आज हमें है गर्व;

आज मेघ हट गए, खिल उठी,
नभ में निर्मल राका,
बापू चला, तुम्हारे युग का
फिर मंगलमय साका !

आज हुए संताप दुरित, अभिशाप पाप सब खर्व,
आज दिवस है व्रत समाप्ति का, महाशान्ति का पर्व !

आज राष्ट्र की शिथिल धमनियों
में जीवन की धारा,
नव जीवन, नव चेतन मन में,
आज छिन्न है कारा;

बापू ! बने रहे तुम, बन जायेंगी विधियाँ सर्व !
आज दिवस है व्रत समाप्ति का, महाशान्ति का पर्व !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जागो बुद्धदेव भगवान

कुशी नगर के भग्न भवन में
कैसे सोये हो बोलो ?
युग युग बीते तुम्हें जगाते
अब तो प्रिय, आखें खोलो !

पत्थर के कारा में बंदी
तुम नीरव निस्तब्ध पड़े,
एक बार जागो फिर गौतम !
हो जाओ अविलंब खड़े !

सारनाथ के जीर्ण शीर्ण
खंडहर हैं तुम्हें निहार रहे,
जागो ! काशी के प्रबुद्ध !
कितने यश आज पुकार रहे !

खड़ी सुजाता है बट तल फिर,
आकुल हृदय अधीर लिए,
पूर्ण खड़ी लिए झारी में,
और दृग में भी नीर लिए !

यशोधरा पद धूलि शीश धरने
को व्याकुल कल्याणी,
शुद्धोधन भूपाल विकल
सुनने को गौतम की वाणी !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

छन्नक वह सारथी तुम्हारा,
खड़ा, बिछा पथ पर पलकें,
राहुल देख रहा उत्कंठित,
धूल धूसरित हैं अलकें!

उधर आम्र पाली आकुल है,
उमड़ा आँखों में सावन!
भिक्षु संघ है खड़ा समुत्सुक
सुनने को प्रवचन पावन!

कृषा गौतमी देखो आई
द्वार मृतक सुत गोद लिए,
आत्म बोध दो बोधिसत्त्व!
वह लौटे धाम प्रमोद लिए!

ऋषि पत्तन मृगदाव
तुम्हारे बिना सभी हैं म्लान मुखी,
कंथक खड़ा उदास पंथ में,
आकुल आँखें, प्राण दुखी!

आज लुँबिनी की दूर्वा भी
लगा रही मन में लेखा,
शाल वृक्ष देखते तुम्हारे
अरुण चरण तल की रेखा!

नैरंजरा नदी की लहरें
गाती हैं फिर कल कल गान,
जागो पीड़ित की पुकार पर
जागो बुद्धदेव भगवान!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अशोक की हिंसा से विरक्ति !

क्यों दहक रहा उर बना अनल ?

यह भीषण नर संहार हुआ,
प्रतिपल में हाहाकार हुआ,
मरघट सा सब संसार हुआ,
पर, नहीं शान्ति संचार हुआ,

क्यों अमृत आज बन रहा गरल ?
क्यों दहक रहा उर बना अनल ?

सिंहासन पर सिंहासन नत,
मानव पर मानव हैं हत मृत !
मुकुटों पर मुकुट मिले श्रीहत,
राज्यों पर राज्य हुए कर गत् !

फिर भी, मन क्यों लगता निर्बल ?
क्यों दहक रहा मन बना अनल ?

खड्ग बन शोणित की प्यासी !
बन महाकाल की रसना-सी,
दौड़ी बन वीरों की दासी ;
पी गई रक्त, जल तृष्णा सी ;

प्रभाती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अब तक न हुआ यह मन शीतल ?
क्यों दहक रहा उर बना अनल ?

विजयी कलिंग है पड़ा ध्वस्त !
दंभी का बल भी हुआ त्रस्त !
बैरी का दिनकर हुआ अस्त ,
किस उलझन में है विश्व व्यस्त ?

क्यों थका हुआ है सब भुजबल ?
क्यों दहक रहा बना अनल ?

कब तक के लिए राज्य का मद ?
कब तक के लिए राज्य का पद ?
दो दिन मानव हो ले उन्मद ,
शोणित के विपुल बहाले नद !

बस, एक घाट जाना है कल !
क्यों दहक रहा उर बना अनल ?

दो दिन ही के हित यह महान !
वैभव सुख संपति का निधान ,
मानव है कितना विगत ज्ञान ?
जो परम सत्य भूला निदान !

फिर, दुःख क्यों न हो उसे सरल ?
क्यों दहक रहा उर बना अनल !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मिट रही आज है सभी भ्रान्ति ,
सुख की मिलती है आज शान्ति ,
कैसी आभा है कनक कान्ति ,
करुणा की मंगलमयी क्रान्ति ,

निर्बल पर क्रूर बने न सबल !
करुणा दे अमर जग को मंगल !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

प्र भा ती

Digitized by eGangotri

करुणा का गीत

तभी मैं लेती हूँ अवतार !

महा क्रान्ति हुंकार लिए जब
करती नर - संहार,
रक्त धार में उतराने
लगता समस्त संसार;

सहम जाते हैं बुद्धि विचार,
तभी मैं लेती हूँ अवतार !

कर्मकांड की लिए दुहाई
नर करते नरमेध,
किन्हीं दीन प्राणों की
आहें जाती अंबर भेद:

बहाते तारक आँसू धार,
तभी मैं लेती हूँ अवतार !

जब कलिंग जय की लिप्सा में
पीते सुरा अशोक,
विजय एकदिन बन जाती है
अंतरतम का शोक,

उमड़ता उर में हाहाकार
तभी मैं लेती हूँ अवतार !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मैं अपने शीतल अंचल में
लेकर जलता लोक,
चंदन का अनुलेपन करती
खिलते सुख के कोक;

न आती फिर दुख भरी पुकार
कि जब मैं लेती हूँ अवतार!

प्रभाती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

होलिका के प्रति

धधक रही है यों ही होली,
तुम क्यों आई हो दीवानी ?
क्या न अभी पर्याप्त अग्नि है ?
तुम्हें पड़ी जो ज्वाला लानी !

रूस जल रहा, फ्रांस जल रहा,
जलता है, पोलैंड नारवे,
चीन और जापान जल रहा,
जलता है हॉलैंड हवा ले;

जलते हैं योरोप, एशिया,
जलता है समस्त भूमंडल,
महाअग्नि की लपटें उठतीं
जलता है अब ब्रह्म कमंडल !

बुझा सके प्रलयाग्नि भयंकर
नहीं किसी में इतना पानी,
धधक रही है यों ही होली
तुम क्यों आई हो कल्याणी ?

सतयुग जलीं, जलीं तुम द्वापर,
त्रेता में तुम जलीं सलोनी,
किन्तु, जला पाईं कब अब तक,
अत्याचार, पाप, अनहोनी ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तुमसे ज़्यादा आग लगी है,
घर-घर में,दर-दर में क्षण-क्षण,
तुमभी जलो होलिके उसमें,
आज काल का नर्तन भीषण!

चाहो भला लौट जाओ तुम,
नहीं झुलस जाओगी रानी!
धधक रही है यों ही होली,
तुम क्यों आई हो दीवानी?

चलीं जलाने थीं तुम उस दिन,
किन्तु, सत्य जल सका न तुमसे,
पावक में पंकज वन फूला,
वह सोना गल सका न तुमसे!

जग ने समझा चली जलाने,
पर, तुम तो थी चली जिलाने,
देवि होलिके! अमरपुत्र को
तुम आईं थीं, अमृत पिलाने!

पा प्रह्लाद गोद में उस दिन,
तुम होगी फूली न समानी!
धधक रही है यों ही होली,
तुम क्यों आई हो दीवानी?

आज रक्त का रंग चल रहा,
भीग रहा वसुधा का अंचल,
राग गूँजता महामरण का,
है दिगंत व्याकुल औ चंचल!

प्रभाती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तन की भस्म अबीर बनी है,
उड़ उड़ कर अंबर तक छाई,
खेल रहे सब फाग नाश से
सबने अपनी बुद्धि गँवाई;

युग में इससे अधिक और क्या
आग लगाओगी कल्याणी!
धधक रही है यों ही होली
तुम क्यों आई हो कल्याणी?

जाओ जाओ, अभी लौट जाओ,
अच्छा हो पुराय प्रसूते!
आज तुम्हारा काम नहीं है,
जाओ आज चली आहूते!

तुम भविष्य के अटल गर्भ में
रहो, नहीं जब तक यह प्याला,
राख बना लें निखिल विश्व को
भरे नहीं चंडी का प्याला;

आना, तब तुम, जब रणाग्नि के
उर से फूटे शीतल वाणी!
धधक रही थी यों ही होली
तुम क्यों आई हो दीवानी?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

श्रद्धाञ्जलि

एक ओर तन में जंज़ीरें
हाथों में हैं हथकड़ियाँ,
पावों में बेड़ियाँ, दूसरी ओर
जलन की हैं घड़ियाँ!

घाव न भर पाते हैं पहले,
और घाव होते जाते,
चले जा रहे गोद छोड़ते
लाल तोड़ते ही नाते!

गंगा रोती और त्रिवेणी,
रोता नतमुख राष्ट्र विशाल,
यमुना के आँसू न सिमटते
खोकर अपना जमनालाल!

आज बनी जननी, भिखारिणी
जिसका प्राण समक्ष चला,
कसी जँज़ीरों से रियासतों
के जनगण का पक्ष चला!

चला आज अपना सेनानी
गढ़ का प्रहरी दक्ष चला!
क्यों न कांग्रेस हो ग़रीबिनी
जिसका कोषाध्यक्ष चला!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बापू दुखी, जवाहर व्याकुल,
राष्ट्रध्वजा है झुकी हुई,
वेणी लुंठित, वाणी कुंठित
मां की गति है रुकी हुई!

किन्तु, अमर हम, अमृत पुत्र हम
मर मर जीने वाले हैं,
एक जन्म क्या, जन्म जन्म
शिव बन विष पीने वाले हैं!

जब तक राष्ट्र बना है बंदी
बनी वंदिनी है माता,
टूट नहीं सकता है तब तक
उस सेनानी का नाता!

उसका नाता, जो कि देश की
आज़ादी का बना फ़क़ीर
राजमहल को छोड़ आ बसा
जहाँ दलित की दीन कुटीर

उसका नाता, लिया न जिसने
सेवा कर कोई वरदान!
अमर हो गया, अमृत पुत्र वह
जन्म भूमि पर हो बलिदान!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अकबर और तुलसीदास

अकबर और तुलसीदास,
दोनों ही प्रकट हुए एक समय,
एक देश, कहता है इतिहास;

'अकबर महान'
गूँजता है आज भी कीर्ति-गान,
वैभव प्रासाद बड़े
जो थे सब हुए खड़े
पृथ्वी में आज गड़े !

अकबर का नाम ही है शेष सुन रहे कान !
किन्तु कवि
तुलसीदास !
धन्य है तुम्हारा यह
रामचरित का प्रयास,
भवन यह तुम्हारा अचल,
सदन यह तुम्हारा विमल,
आज भी है अडिग खड़ा,
उत्सव उत्साह बड़ा,
पाता है वही जो जाता है तीर में !

प्रभाती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

एक हुए सम्राट्
जिनका विभव विराट्
एक कवि, —रामदास
कौड़ी भी नहीं पास,
किन्तु, आज चीर महाकालों की
तालों को,
गूँजती है, नृपति की नहीं,
कवि की ही वाणी गँभीर !
अकबर : महान जैसे मृत
तुलसीदास : अमृत !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रसाद जी को पुण्य स्मृति में

भारतीय सुसंस्कृति के गर्व
औ अभिमान !
बुद्ध की सबुद्धि के कल्याण—
मय आख्यान !
आर्य-गौरव के अलौकिक दिव्य
उज्ज्वल गान !
राष्ट्रभाषा के विधाता, श्री,
सुरभि, सम्मान !

नित्य मौलिक, ऐतिहासिक, चिर-
विचारक आप ,
भावना औ' ज्ञान के युग पद ,
समन्वित छाप !
त्याग आज सकाम जगती, तुम
चले निष्काम,
युग प्रवर्तक, क्रान्त दर्शी, तुम्हें
सतत प्रणाम !

प्रभाती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सजल स्मृति

[आचार्य शुक्ल जी के निधन पर श्रद्धाञ्जलि]

चले अयोध्या सूनी करके
क्यों हिन्दी के राम ?
कौशल्या को कौन बँधावे
धैर्य, मिले विश्राम !

भरत ! चलो वे चरण पादुका
ही ले आओ थाम,
उनका ही पूजन अर्चन हो
पूर्ण बनें सब काम !

सिंहासन है रिक्त तुम्हारा
इसमें बैठे कौन ?
अधिकारी है कौन यहाँ पर,
उत्तर में सब मौन !

वंदनीय, अभिनंदनीय है
गौरव गरिमा धाम !
सजल स्मृति नित बजा करेगी,
पदतल कोटि प्रणाम !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

महाकवि

पंडित अयोध्या सिंह उपाध्याय के प्रति

आज नगरी में हमारी
कौन सा मेहमान आया ?
तिमिर में दीपक जला है,
भक्त - गृह भगवान आया !

सित बने हैं केश काले
की कठिन किसने तपस्या ?
भाव - भाषा - छंद की
सुलझी सभी उलझी समस्या !

आज कवि के कंठ में क्यों
लिए नवरस गान आया ?
आज नगरी में हमारी
कौन सा मेहमान आया ?

आज किसकी अस्थियों में
उठ खड़ी भाषा हमारी ?
सींच किसने रक्त से
कर दी हरी आशा हमारी ?

कौन पतझर में हमारे
मधुर मधु का दान लाया ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आज नगरी में हमारी
कौन सा मेहमान आया ?

गोमती के भाग्य पर
करती स्पृहा है गंगधारा,
अवध ही की गोद में क्यों
अवध का हरि है पधारा ?

रंक रसिकों की कुटी में
आज नव वरदान आया।
आज नगरी में हमारे
कौन सा मेहमान आया ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रेमचंद के प्रति

मंद होगई ज्योति आज अपने हिन्दी के आँगन की,
अस्त हो गया प्रेम चंद, सिमटी उजियाली जीवन की,
आज पूर्णिमा लुटी, अमा छाई है काली कण-कण में,
हा! कैसा दुर्भाग्य? भाग्य मिटता जाता है क्षण-क्षण में!
वज्रपात! यह सर्वनाश
कैसा जननी पर टूट पड़ा,
माता का लाड़ला लाल
माँ के अँचल से छूट पड़ा!
प्रेमचंद्र! तुमने अपने यौवन में ही सन्यास लिया,
वैभव सुख पर पद-प्रहार करके कुटिया में वासलिया;
गला-गला हड्डियाँ, बहाकर रक्त, विकसते यौवन का,
सींची हिन्दी की फुलवारी, कुंज राष्ट्र के मधुबन का;
पुरुषसिंह! तुम वीर बाँकुरे!
देश प्रेम के मतवाले!
एक बार क्या? कई बार
पीगए उठा विष के प्याले!
चली तुम्हारी कला मिटाने जननी के दिल की पीड़ा,
कड़ियाँ देख, सिमट आँई, आँसू बन, नसनस की व्रीड़ा,
अंतिम बेला भी तो तुम निज प्राण लिये आगे आये,
मातृभूमि पर मर मिटने को प्राण तुम्हारे हुलसाये;
सह न सके क्या जन्मभूमि की
पीड़ा; अपनी लाचारी,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इसीलिए, इतनी जल्दी की
मृत्यु-लोक की तैयारी ?

*   *   *

हम कृतघ्न हिंदीवालों को
कब आयेगा जग में ज्ञान ?
सीख सकेंगे कब बलि होने
वालों का करना सम्मान ?[1]

---

[1]यह कविता बहुत बड़ी लिखी गई थी, अब इतनी ही अवशिष्ट है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

'रत्नाकर'

एक स्वर्णकण खो जाने से
हो उठता उर कातर,
कैसे धैर्य धरे वह जिसका
लुट जाये 'रत्नाकर'!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

स्वागत-गान

स्वागत ! सूरदास के गृह में
सूरश्याम के आँगन में
व्रज कोकिल कवि सत्यनरायन
की कुटिया में—प्रांगण में !

स्वागत ! नूरजहाँ की सुंदरता
से सिंचित नगरी में,
स्वागत ! जहाँगीर के प्राणों
से अभिसिंचित नगरी में

ताजमहल की मीनारें ये
हाथ उठा स्वागत करतीं,
पद पखारने को आगत के
यमुना अंजलियाँ भरतीं;

स्वागत ! भारत के अतीत-
गौरव के अचल निकेतन में
स्वागत ! सूरदास के गृह में
सूरश्याम के आँगन में !

शत शत शिल्पी निशिदिन
पलकों पर ले ले मादक सपने,
उठा तूलिका यहीं कर गए
अमर काव्य चित्रित अपने,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

विश्व-नयन विस्मित, आह्लादित,
देख मनोरम ताजमहल!
रसिक उरों में राज कर रहा
खड़ा प्रेम का राजमहल?

इन्द्रप्रस्थ के सिंहद्वार में
वैभव के खंडहर वन में,
स्वागत! सूरदास के गृह में
सूरश्याम के आँगन में!

अकबर के वैभव प्रदीप थे
कभी यहीं पर छवि भरते,
कितने ही लोचन के शतदल
रूपराशि जल पर तरते,

वे दिन रहे, न अब वे रातें,
जब सौरभसिंचित करते,
पथ पर कंकण-किंकिणि के स्वर
पथ की श्रान्ति क्लान्ति रहते!

स्वागत! पलकों पर, आंखों पर,
स्वागत है हृदयासन में
स्वागत! सूरदास के गृह में
सूरश्याम के आँगन में!

आज आम्र कानन में कोकिल
रह रह कैसी बोल रही?
तन मन में जीवन-प्राणों में
रह रह नवमधु घोल रही,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE
प्र भा ती

Digitized by eGangotri

बंदनवार बनी है पथ में
बनी मंजरित अमराई,
आज आगरा धन्य! देख
आये गृह में कितने भाई!

स्वागत! आगत! अमृत प्रदाता,
मृतकों के जगजीवन में
स्वागत! सूरदास के गृह में
सूरश्याम के आँगन में!

मंगलमय हो घड़ी आज, यह
मंगलपर्व बने आशा,
उठे मातृभाषा का मंदिर
फूले मन की अभिलाषा,

रहे अलंकृत रत्ना भरणा,
घर संस्कृति सुहाग बिंदी
कोटि कोटि कंठों में गूँजे
मधुर मातृभाषा हिंदी!

स्वागत! भाषा भाग्य विधाता!
ज्योतिरूप तम के घन में
स्वागत! सूरदास के गृह में
सूरश्याम के आँगन में।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रजत जयंती

मंगल के मधुमय गान लिए, उत्सव के विविध विधान लिए
आ रही रजत के पंख लिए, वह कौन ? स्वर्ग-वरदान लिए
पग-पग जगमग, मग-मग जगमग,
कैसी दीपावलि सजी सुभग ?
मंगलघट, मंगल दीप सजे, यह किसका अर्ध्य प्रदान लिए ?
आ रही रजत के पंख लिए, वह कौन ? स्वर्ग वरदान लिए ?
आया है कैसा पुण्य पर्व ?
जग रहा हमारा पूर्व गर्व;
तन्मयता वीणा बजा रही, कैसी यह मादक तान लिए ?
आ रही रजत के पंख लिए, वह कौन ? स्वर्ग वरदान लिए ?
सुलझी-सी जटिल समस्या है ?
यह किसकी उग्र तपस्या है ?
बह उठी ज्ञान-गंगा भू पर, यह किसका कीर्ति वितान लिए
आ रही रजत के पंख लिए, वह कौन ? स्वर्ग वरदान लिए
यह रजत जयंती का उत्सव,
यह मगध अवंती का वैभव;
यह मालवीय जी का तप है, विकसित अमृत का दान लिए !
आ रही रजत के पंख लिए, वह कौन स्वर्ग वरदान लिए ?[1]

---

[1] हिन्दू विश्वविद्यालय की रजत जयंती के अवसर पर लिखित ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मंगल-गान

आज सदियों बाद अपने देश में यह पर्व आया।
जब कि विद्या का दिवस है जा रहा घर-घर मनाया।
सूर्य भी थे, चाँद भी थे,
किन्तु था फिर भी अँधेरा,
आज उनकी झोपड़ी में
हो रहा कुछ-कुछ उजेरा;
इन बुझे अन्तर्दृगों को ज्योति दे किसने जगाया?
खुल गईं आँखें हमारी
तब नया संसार देखा,
खिंच रही है आज
जीवन की निशा में स्वर्ण-रेखा;
कनक-किरणें फूटती हैं, आज मधुमय प्रात छाया।
पढ़ रहे उत्साह लेकर
आज उत्सुक बहन-भाई,
एक अक्षर बन गया तो
निधि अनूठी हाथ आई;
अक्षरों ने आज मिलजुल जागरण का गान गाया।
ज्ञान का मंदिर खुला है
जो चहे सानंद आये,
क्षीर-सागर है भरा यह
प्यास जो चाहे बुझाये;
ला अमृत का घूँट किसने आज मृतकों को जिलाया?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ईंट से औ' पत्थरों से
मत महल-मंदिर बनाओ,
अक्षरों के स्तंभ देकर
यह गिरा मानव उठाओ!
वह महादानी कि जिसने दान विद्या का लुटाया।
आज सदियों बाद अपने देश में यह पर्व आया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अभिनन्दन

तुम जननी के शृंगार-हार !
तुम हिंदी के शृंगार-हार !

ले लघु लघु शब्दों की गागर,
तुम भरते अर्थों का सागर,
शुधि, शिल्पी, कलाकार, नागर.

वीणा वाणी के मधुर तार
तुम जननी के शृंगार हार !

दे दिया काव्यतरु में पल्लव,
नव-रूप-गंध रस का वैभव,
कोकिल बन किया मधुर कलरव

पतझर में ले आये बहार
तुम जननी के शृंगार हार !

रच रम्य प्रकृति के ललित चित्र,
जग जीवन रँग से भर विचित्र,
मन प्राण किए तुमने पवित्र,

तम में प्रकाश लाये उतार,
तुम भाषा के शृंगार हार !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वैभव वंधन से गृही ! भाग,
यौवन ही में लेकर विराग,
दिखलाया संयम, तपःत्याग,

कविता में जीवन दिया ढार !
तुम जननी की गरिमा अपार !

तुम भाषा के गायक अनन्य,
पूजा तज की, सेवा न अन्य,
तुमको पा जननी हुई धन्य !

सज उठा मातृमंदिर अपार
पा सुकवि तुम्हारा अमर प्यार !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

प्रभाती

Digitized by eGangotri

आ ती

मंगलगान

[हिन्दी-शब्द-सागर के लिए लिखित]

खुला हिंदी मंदिर का द्वार,
हुआ है नव अद्भुत शृंगार,
आ रहे पत्र पुष्प ले भक्त,
चढ़ाते हैं सुंदर उपहार,

चरण में लोट लोट अविराम
कर रहे मां को सभी प्रणाम !

पड़ा है बहुत दिनों में पर्व,
बहुत दिन में आया त्यौहार,
जुड़े हैं देश देश के बन्धु,
चढ़ाते गूँथ-गूँथ कर हार,

प्रकट कर अंतर का अनुराग,
सुनाते मां को अपना राग !

भारती मां है परम प्रसन्न,
मुसकराती है बारंबार,
देखकर पास खड़े सब पुत्र
हृदय से उमड़ा पड़ता प्यार !

आज है दोनों मुग्ध निहाल
सुखी मा और सुखी हैं लाल !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आज कितना मोहक उल्लास ?
आज कितना मादक आनंद ?
आज कितना मधुपूर्ण प्रभात,
नहीं कह सकता कोई छंद,

नहीं भाषा कर सकती बंद
मौन हैं भाव, मौन आनंद !

चलो अनुराग-राग को छेड़
सुनावें ऐसा कोई गान,
लगे बहने अमृत का श्रोत,
पियें प्यासे पृथ्वी के प्राण,

सुनावें कोई ऐसा गान
मुग्ध हो खिँच आवे कल्याण ![1]

---

[1]काशी नागरी प्रचारिणी के 'हिंदी-शब्द-सागर महोत्सव के समय लिखित।

प्रभात

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आती

अभिनन्दन

वृन्दावन की गलियों में
उल्लास आज है छाया।
बाँसुरी बजाने वाला,
मनमोहन मोहन आया।

पुष्पित कदम्ब डाली पर
नव मधु ऋतु झूल रहा है।
मृदु-गन्ध-लुब्ध अलि बालक,
मधु पी सुध भूल रहा है।

मेरी ममता मतवाली,
खुश होकर झूम रही है।
ओ आने वाले तेरे,
चरणों को चूम रही है।

पथ पर मृदु पलक बिछा कर
मैं करता हूँ अभिनन्दन।
तेरी पद रज बनती है
मेरे मस्तक का चन्दन।

मैं सागर बन कर तेरे
पद प्रक्षालन हित आता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

स्वागत के गीत सुनहले
मैं मलय-पवन बन गाता।

सम्मेलन एक तपोवन,
करते ऋषि जहाँ तपस्या,
बस, यहीं राष्ट्र भाषा की,
सुलझें सब कठिन समस्या।

माँ के पद-नख-किरणों में
यह ओस सदृश लघु जीवन,
सब भक्ति-भाव में लय हों,
कर दें सुख मुग्ध समर्पण।

प्र भा ती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भैरवी के जन्मदिवस पर

आज अवंध्या बनी, स्वर्ण संध्या में प्रतिभा रागमयी,
आज महोत्सव हो मेरे गृह, रसना हो अनुरागमयी;
रोमों में ले पुलक, साधना बैठी बनी सुहागमयी,
गत विहाग की निशा; उषा है आज 'भैरवी' रागमयी!

चलो आज कवि! अमृत-अर्घ ले
श्रान्त, क्लान्त पद को धोने,
जीवन के ऊजड़ ऊसर में
हरे-भरे अंकुर बोने!

कवि! सोचो मत अब तक तुमने नहीं नई उपमायें दीं,
नई कल्पना, नये छंद, गति, नहीं नई रचनायें दीं!
अमृत-कलाकरों का अब तक तुमने नहीं किया सम्मान,
नंगे-भिखमंगों में गाये तुम ने भूख-प्यास के गान;

नहीं चाहिए गीत और अब,
है न माँग मृदुतानों की,
शोणित की, शिर की, प्राणों की,
है पुकार बलिदानों की!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हो दूर

गृह गृह विद्या का हो प्रसार
हो दूर देश से अंधकार

कोरी पाटी पर प्रथमाक्षर
चमके बन करके स्वर्णाक्षर,
पीछे से सुखद सहारा दे
अपने भाई का पावन कर,

पथ-पथ हो जागृति का प्रसार,
हो दूर देश से अंधकार!

नवयुवक राष्ट्र के सिर पर लें
यह जन-सेवा का मधुर भार,
साक्षर हों सभी निरक्षर ये,
अक्षर दें मधु मंगल प्रसार,

जगमग हों दीपक द्वार द्वार,
हो दूर देश से अंधकार!

हम बढ़ें विश्व-पथ पर प्रसन्न,
हों ज्ञानमुखर, हों कर्म लीन,
पहुँचे जग-जीवन के यात्री
बज रही मुक्ति की जहाँ बीन,

विद्या ही नर का मोक्ष द्वार
हो दूर देश से अंधकार!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्राची प्रांगण में

है सुदूर प्राची प्रांगण में
भीषण हाहाकार मचा,
दो मुट्ठी है अन्न न मिलता
निष्ठुर नर - संहार मचा,
त्राता ने है हाथ समेटा,
बैठा दूर विधाता है।
भूखे तड़प रहे हैं भाई,
बहनें, भूखी माता हैं!
मरनेवालों की आहों का अब न अधिक अपमान करो!
हे सपूत! संकट की बेला, आज बढ़ो, तुम त्राण करो।
वह देखो पथ—पर कितने ही
हाथ उठ रहे हैं ऊपर,
रोटी एक सामने है
सैकड़ों खड़े हैं नारी-नर;
सूख गया तन, रक्त नहीं है,
आँखें धँसी हुई भीतर,
काल-गाल में चले जा रहे
कितने ही ठठरी बनकर,
काल-गाल में गए सैकड़ों, इन्हें न अब मेहमान करो।
हे सपूत! संकट की बेला, आज बढ़ो, तुम त्राण करो।
'रोटी-रोटी' की पुकार है
राहों में चौराहों में।
'भात-भात' की है गुहार
आहों में और कराहों में।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कितने ही शव निकल चुके
मरकर भूखों की मारों में,
देख रहे अधमरे तुम्हें,
डूबे हैं रुद्ध पुकारों में,
सुनो टेर मरनेवालों की, जीवन इन्हें प्रदान करो।
हे सपूत! संकट की बेला, आज बढ़ो, तुम त्राण करो।
सोचो होते, काश, तुम्हारे
ये अनाथ बेटा-बेटी,
सह सकते क्या इनकी आहें
सह सकते इनकी हेटी?
कितने प्यार दुलारों से
माँ बापों ने पाला होगा?
आँसू इनके देख हृदय में
फूटा-सा छाला होगा।
आज उसी ममता से, मन से, तुम इनका सम्मान करो।
हे सपूत! संकट की बेला, आज बढ़ो, तुम त्राण करो।
यह अपना बंगाल क्षुधित है
जिसने पोषण भरण किया,
यह अपना बंगाल व्यथित है
जिसने नित धन-धान्य दिया।
लो समेट आकुल बाँहों में
क्षुधित बंधु को करुणाकर!
ओ पांचाल, बिहार, सिंधु,
गुजरात, बढ़ाओ अगणित कर;
ओ अशेष भारत! उद्यत हो, तन मन धन-बलिदान करो।
हे सपूत! संकट की बेला, आज बढ़ो, तुम त्राण करो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अखंड भारत

तुम कहते—मैं लिखूँ तुम्हारे लिए नई कोई कविता,
मैं कहता—क्या लिखूँ ? अस्त है अपनी गरिमा का सविता !
कलम बंद, मुँह बंद, लिखूँ फिर क्या मैं अब तुमको साथी !
आज चले वे संग छोड़, पथ मोड़, कि जिनसे आशा थी।
राजा की मति रंक हुई, तब औरों की हो क्या गणना ?
ये अखंड भारत को खंडित करने चले समझ बढ़ना।
क्या बतलाऊँ—बड़े बुज़ुर्गों की तुमको बहकी बातें ?
जो दिन समझ ला रहे हैं, अपने ही आँगन में रातें !
'बुद्धिभेद जनयेत् न कदाचित्' क्या इनसे कहना होगा ?
'पंक्ति भेद है पाप' अलग हो ! याकि अलग रहना होगा !
क्या ग़ैरों से लोहा लेंगे, जब घर में ही फूट हुई ?
जो भी संघशक्ति थी अपनी पथ में उसकी लूट हुई !
आज बहाने चले भगीरथ उल्टी गंगा की सरिता !
तुम कहते—मैं लिखूँ तुम्हारे लिए नई कोई कविता !!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भिक्षा-दान

आया एक देहवान, बलवान, रूपवान,
बोल उठा,'दीजिए हमें भी कुछ भीख-दान';
भला करे भगवान, बढ़े नित धन-धान,
पुत्र-पौत्र हों, अनेक, बढ़ा करे यशमान;

भारत के भार तुल्य, ऐसे ही अनेक शल्य,
मल्ल फिरा करते हैं, मैंने लिया पहचान;
मैंने कहा, 'भीख-दान कैसे हो प्रदान ? देव !
सूतक हमारे यहाँ आज हुआ वर्तमान !'

पूछ उठा, चतुर, सुजान, वह गुणवान
'मृत्यु हुई किसकी ? दुखी हो जिससे महान',
मैंने कहा, मर गया मेरा ही अज्ञानसुत,
मर गई—'अंध अनुकरण की सन्तान';

रीझ उठा, खीझ उठा, उसने दिया जवाब,
जान लिया, दिखलाते आप बड़े बुद्धिमान,
उसने किया प्रयाण उधर, इधर मेरे
अधरों में नाच उठी एक मौन मुसकान !

प्रभाती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE.

Digitized by eGangotri

विक्रमादित्य

(समवेत गान)

वह था जीवन का स्वर्णकाल,
जब प्रात प्रथम था मुसकाया;

क्षिप्रा की लहरों में केसर कुंकुम का जल था लहराया!

आलोक अलौकिक छाया था,
वरदान धरा ने पाया था,

विक्रमादित्य के व्याज स्वयं आदित्य तिमिर में था आया!

वैभव विभूति के पद्म खिले,
सुख के सौरभ से सद्म खिले,

बहता मलयज संगीत लिए आनंद चतुर्दिक था छाया!

कवि कालिदास की वरवाणी,
गाती थी गौरव कल्याणी,

नव मेघदूत के छंदों ने मकरंद मेघ था बरसाया!

नवरत्नों की वह कीर्ति कथा,
बनती प्राणों में मधुर व्यथा,

वह दिन कितना सुंदर होगा, जब था इतना वैभव छाया!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उज्जैन अवंती का वैभव,
दिशि-दिशि करता फिरता कलरव,

उस दिन, दरिद्रता धनी बनी, सब ने ही था सब कुछ पाया!

कितनी शताब्दियाँ गईं बीत,
झंकृत फिर भी, अब भी अतीत,

सुनता रहता नीरव दिगंत, नभ प्रति ध्वनि करता दुहराया!

इतिहास न वह भूला मेरा,
डाला विदेशियों ने घेरा;

यह विक्रम ही का विक्रम था, पल में पदतल अरिदल आया!

उस विजय दिवस की स्मृति स्वरूप
प्रचलित विक्रम संवत अनूप,

रे, दिवस मास वे पुण्य पृष्ठ, जब जय-ध्वज हमने फहराया!

उसदिन की सुधि से है निहाल,
हिमगिरि का उन्नत उच्चभाल,

गंगा-यमुना की लहरों में, अमृत जल करता लहराया!

प्रभाती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अभियान-गीत

घन उमड़-घुमड़ हों गरज रहे,
छाई काली अँधियाली हो,
अविरल अजस्र जल गिरता हो,
पथ में न कहीं उजियाली हो;

बिजली भी भय से काँप रही,
छिपती हो घन के अंचल में,
उपलों की भीषण वर्षा हो,
साहस थकता हो प्रति पल में,

दायें खाईं, बायें खाईं,
हो राह बीच में सकरीली,
उसपार उसी से जाना हो,
बिछलन हो, हो मिट्टी गीली।

फिर भी अधीर हो पांथ नहीं,
दृढ़ दृष्टि समुन्नत भाल किए,
अविचल गति से तुम चलेचलो,
प्राणों की अन्तिम ज्वाल लिए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

1Φ1
H

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE